आर. एन. आई. नं. : RJHIN16694

पोस्टल रजि. नं.

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन – प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 2 अंक : 1 बीकानेर, सितम्बर, 2014 मूल्य : ₹ 2.00

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति का स्वाधीनता दिवस पर सम्बोधन

आओ हम सब स्वर्णिम काल की ओर बढ़ें

प्रिय, छात्रों, शिक्षकों, कर्मचारियों, भाई और बहनों! आप सबकी मेहनत लगन और निष्ठा से स्थापना के अल्प 4 वर्ष में वेटरनरी विश्वविद्यालय ने चहुँमुखी प्रगति कर राज्य और देश में अपना एक विशिष्ट स्थान अर्जित करने में सफलता हासिल की है। कर्मचारियों को पेंशन के लिए राजकीय सहायता की निर्भरता खत्म करने वाला और उत्तरपुस्तिकाओं की ऑन लाइन जांच कर शीघ्र परिणाम देने वाला देश का पहला विश्वविद्यालय बनने का हमने गौरव प्राप्त किया है। अनुसंधान क्षेत्र में हैरिटेज जीन बैंक के माध्यम से गौवंश की 5 देशी नस्लों के उन्नयन कार्य लागू किये गए। राज्य में दुग्ध उत्पादन में बढ़ोतरी के लिए अच्छी नस्ल के 450 नंदी (नर बछड़े) राज्य की 86 गौशालाओं को प्रदान किये गए हैं। मिलावटी और सिंथेटिक दूध की जाँच के लिए विश्वविद्यालय द्वारा जयपुर में उन्नत दुग्ध जाँच प्रयोगशाला की स्थापना एक महत्वपूर्ण कदम है। अपने युवा वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित करने के लिए विश्वविद्यालय लघु अनुसंधान परियोजनाओं को अपने संसाधनों से शुरू करवायेगा। हाल ही में राज्य सरकार के बीकानेर संभाग में प्रवास के दौरान वेटरनरी विश्वविद्यालय के कार्यों और संसाधनों से प्रभावित होकर सरकार द्वारा राज्य के पशुपालन विभाग के अधीन पशु चिकित्सालयों के सुदृढीकरण, केन्द्रीयकृत निर्देशों और पर्यवेक्षण कार्यों में विश्वविद्यालय की सेवाओं को लेकर मंथन शुरू हो गया है। केन्द्र सरकार के प्रस्तावित राष्ट्रीय गोकुल मिशन में देशी गौवंश नस्ल सुधार और दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के कार्यक्रमों पर वेटरनरी विश्वविद्यालय पहले से ही कार्य कर रहा है। शैक्षणिक क्षेत्र में यहां के विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर पर जूनियर फैलोशिप, कृषि अनुसंधान सेवाओं आदि में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रगति के नित नए आयाम स्थापित कर लोगों की आकांक्षाओं के अनुरूप कार्य करने और करोड़ों पशुओं के उत्थान के लिए संकल्पबद्ध हैं। विश्वविद्यालय का वर्ष 2051 तक की प्रगति का रोड़ मेप तैयार है। देश का पहला विश्वविद्यालय है जिसने स्थापना के 4 वर्षों में डेढ़ करोड़ रू. की आय को पौने सात करोड़ तक पहुंचाकर वित्तीय संसाधन सृजित किए हैं। आयुर्वेट (पौधों से औषधी निर्माण कम्पनी) से आपसी करार किया है जिसके तहत आगामी 9 अक्टूबर को नई दिल्ली में तीसरे नॉलेज सिम्पोजियम का आयोजन किया जा रहा है। राज्य के पशुपालकों और कृषकों तक नई तकनीक, नवाचार और पशुपालक कल्याण की योजनाओं को पहुँचाने का सार्थक प्रयास किया जा रहा है। वेटरनरी विश्वविद्यालय का आने वाले समय स्वर्णिम होगा और हम सभी को राजुवास में होने का फक्र महसूस होगा। जय हिन्द!

68वें स्वाधीनता दिवस पर प्रो. ए. के. गहलोत ने 15 अगस्त को विश्वविद्यालय के दीवान–ए–आम में ध्वजारोहण किया। इस अवसर पर उन्होनें उत्कृष्ट सेवा और कार्यों के लिए 50 जनों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। कुलपति प्रो. गहलोत ने प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. सी.के. मुरड़िया द्वारा तैयार ''धीणे री बात्यां'' आकाशवाणी से प्रसारित अब तक के 83 कार्यक्रमों की सी.डी. का लोकार्पण किया। मासिक प्रकाशन ''पशुपालन नए आयाम'' के एक वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य पर तैयार विशेषांक का विमोचन किया। समारोह में देशभक्ति पूर्ण सांस्कृतिक कार्यक्रम और सामूहिक वृक्षारोपण का आयोजन किया गया।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशु शरीर क्रिया विज्ञान का विभाग

पशु शरीर क्रिया विज्ञान विभाग राजुवास के पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान महाविद्यालय का एक महत्वपूर्ण विभाग है। इसके प्रमुख कार्यों मे शिक्षण, प्रशिक्षण, शोध एवं पशु रोगों के निदान में सहायता करना है। विभाग में उच्च गुणवत्ता के शोध कार्य हुए हैं जिन्हें भारत ही नहीं वरन विदेशों में भी सराहा गया है और उसे शोध पत्रिकाओं में स्थान मिला है। यहां लगे उपकरणों एवं नवीनतम उच्च तकनीक की जानकारी लेने के लिए स्कूली बच्चे भी समय समय पर भ्रमण के लिए आते हैं। अन्य विभागों के शोधार्थी भी यहाँ आकर नीवनतम तकनीकों का लाभ उठाते हैं। मशीनों के द्वारा शोधार्थियों को पशुओं के इसिजी, इऍमजी इत्यादि के बारे में जानकारी दी जाती हैं। विभाग द्वारा कुछ कार्यकारी मॉडल तैयार किये गए हैं जिनके द्वारा पशुपालकों को पशु के शरीर में होने वाली क्रियाओं की जानकारी देकर समझाया जाता है कि किन वैज्ञानिक तरीकों से पशुओं की देखभाल करें और किन तत्वों की कमी से पशुओं में कौन सी बीमारियाँ हो सकती हैं। इस विभाग में अत्यंत महत्वपूर्ण शोध कार्य हुए हैं जिनसे पशुओं के स्वास्थ्य, उत्तम रख–रखाव, प्रबधंन इत्यादि की जानकारी मिलती है। पशु शरीर की विभिन्न प्रक्रियाओं को जानना वैज्ञानिक स्तर पर होना आवश्यक होता है। यह बीमारियों की पहचान में मदद करता है। विभाग के शोध से पशुओं के विभिन्न अंगों की सामान्य कार्य प्रणालियों की जानकारी प्राप्त हुई है। यहां पशुओं के वृक्कीय कार्यों पर किया गया शोध विश्व में अपना स्थान रखता है। पशुओं के शरीर में विभिन्न परिस्थितियों में जल प्रबंधन के बारे में जानकारी मिलती है। पशुओं में कई तरह की बीमारियों में निर्जलीकरण का लम्बे समय तक चलना स्वस्थ्य के लिए घातक हो सकता है अतः इसका उचित वैज्ञानिक प्रबंधन जरूरी है। क्षेत्र में पाए जाने वाले ऊंटों, भेड़ों एवं बकरियों के वृक्कों पर हुए शोध कार्यों की वैज्ञानिक महत्ता है।

Dr. S. Ayyappan
Secretary & Director General

भारत सरकार
कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग एवं
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्
कृषि मंत्रालय, कृषि भवन, नई दिल्ली-110 001

GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF AGRICULTURAL RESEARCH & EDUCATION
AND
INDIAN COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
MINISTRY OF AGRICULTURE, KRISHI BHAWAN, NEW DELHI 110 114
Tel. : 23382629; 23386711 Fax : 91-11-23384773
E-mail : dg.icar@nic.in

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई है कि राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा प्रसार शिक्षा के अन्तर्गत राज्य के पशु–पालकों एवं पशु–प्रेमियों के हित में प्रति माह प्रकाशित ''पशुपालन नये आयाम'' ने अपने सफलतापूर्ण प्रकाशन का एक वर्ष पूरा कर लिया है।

भारत में गो जातीय पशुओं की आबादी सर्वाधिक है और हमारा राष्ट्र दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में भी विश्व में प्रथम पायदान पर है। देश की बढ़ती जनसंख्या की दूध की मांग को पूरा करने और पशु–पालकों की आजीविका सुनिश्चत करने के लिए पशुपालन पर विशेष ध्यान दिये जाने की आवश्यकता है। ''पशुपालन नये आयाम'' पत्रिका पशुओं से संबंधित भिन्न पहलुओं पर विषय विशेषज्ञों की जानकारी सरल हिन्दी भाषा में पशुपालकों तक पहुँचाई जा रही है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका इसी प्रकार पशु–पालकों व वैज्ञानिकों के बीच कड़ी का कार्य करती रहेगी।

मैं, पुनः कुलपति एवं इस पत्रिका के सम्पादक मण्डल को बधाई देता हूँ तथा इस पत्रिका की सफलता की कामना करता हूँ

(एस. अय्यप्पन)

इस विभाग में पशु के शरीर में पाए जाने वाले हारमोनो के अध्ययन की एक प्रयोगशाला स्थापित की गयी है जिसे रेडियोआइसोटोप लेबोरेटरी कहते हैं। यह भाभा परमाणु अनुसन्धान केन्द्र के द्वारा प्रमाणित है। हारमोन पशु के शरीर की विभिन्न गतिविधियों, प्रजनन, दुग्ध उत्पादन एवं अन्य महत्वपूर्ण क्रियाओं को नियंत्रित करते हैं। इस प्रयोगशाला से हारमोनों की मात्रा को ज्ञात किया जा सकता है। यहां हो रहे शोध कार्यों में पशुओं में तनाव का अध्ययन शामिल है। पशुओं में तनाव एक गंभीर स्थिति है, जिससे अन्य बीमारियां होने की सम्भावना बढ़ जाती है। विभाग में हुए शोध कार्यों से कोशिका स्तर पर भी तनाव की स्थिति का पता लगाया जा सकता है। पशुओं में तीव्र वातावरणीय प्रभाव की गंभीरता के मद्देनजर तेज गर्मी एवं सर्दी के प्रभाव दुधारू पशुओं के स्वास्थ्य पर तथा पशुओं में पाए जाने वाले खनिज तत्वों की मात्रा भी देखी गयी है। इनके निष्कर्षों से पशुपालकों को लाभ मिला है। पशुओं में बीमारियों की स्थिति में उनके शरीर में होने वाले बदलावों को भी चिन्हित किया गया है। इसका लाभ उक्त बीमारियों की गंभीरता को पहचानने में मिला है।

कृषि में कीट नाशकों का उपयोगः पशुधन एवं मनुष्यों पर प्रभाव

भारत एक कृषि प्रधान देश है जहां लगभग 60 प्रतिशत लोग कृषि कार्यो में लगे हुए हैं। हरित क्रान्ति से देश अन्न उत्पादन में तो आत्मनिर्भर हो गया लेकिन कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग होने के कारण इसके अवशेष भूमि, पशुओं के चारा एवं फल सब्जियों आदि में रह जाते है जिससे कुप्रभाव पशुओं एवं मनुष्यों में दिखाई देने लगे हैं।

मुख्य रूप से कृषि कार्यों में कीटों, चूहों, जीवाणु एवं फफूंद आदि को नियंत्रित करने एवं मारने हेतु निम्नलिखित कीटनाशक प्रयोग में लिए जाते हैं।

1. **आर्गेनोफॉस्फेट कीटनाशीः–** यह कीटनाशी तन्त्रिका तंत्र पर प्रभाव डालते हैं एवं एसीटाइलकोलीन एवं न्यूरोट्रांसमीटर को नियंत्रित करने वाले एन्जाइम तन्त्र को नष्ट कर देते हैं। उदाहरणः– डाईजीनोन, मैलाथियोन, कोमाफोस आदि।
2. **कार्बेमेट कीटनाशीः–** यह कीटनाशी तन्त्रिका तंत्र एव एन्जाइम तंत्र को प्रभावित करते है तथा इनका प्रभाव प्रतिवर्ति होता है। उदाहरणः– डाईजीनोन, मैलाथियोन, कोमाफोस आदि।
3. **आर्गेनोक्लोरीन कीटनाशीः–** डीडीटी, क्लोरडेन, एल्ड्रीन, डाईएल्ड्रीन, हेप्टाक्लोर आदि।

पश्चात बकरे के मांस एवं बीफ में पाया गया है। इनमें भी ऑर्गेनोक्लोरीन के अवशेष पाये गये है। मांस का सेवन करने वालों के लिए यह एक चिन्ता का विषय है। ऑर्गेनोक्लोरीन कीटनाशी जैसे डीडीटी, क्लोरडेन, एल्ड्रीन से संदुषित पशुचारा

जैविक पशु उत्पादों के लिए विश्वविद्यालय के प्रयास

– वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा बीकानेर में **जैविक पशु उत्पाद तकनीकी केन्द्र** की स्थापना कर जैविक उत्पादों (दूध, मांस) के लिए कृषकों और पशुपालकों को जागरूक किया जा रहा है। जैविक पशु उत्पादों की कीमत तीन गुणा अधिक मिलती है जो उनके लिए अधिक लाभदायक है।

– **बीकानेर में पशुआहार एवं पशु चारा गुणवत्ता जांच प्रयोगशाला** की स्थापना से कीटनाशकों का आंकलन कर बचाव के लिए कृषकों और पशुपालकों को प्रेरित किया जा रहा है। कीटनाशक मुक्त आहार देने से जैविक पशु उत्पाद प्राप्त किये जा सकते हैं।

– जयपुर में दुग्ध जांच की हाइटेक प्रयोगशाला की स्थापना से शुद्ध और मिलावटी दूध की पहचान वैज्ञानिक तौर पर की जा सकेगी। इससे पोषण युक्त–शुद्ध दुग्ध उत्पादन करने में मदद मिलेगी।

4. **पाईथरोइड कीटनाशीः–** ये पाइरेथ्रीन से पैदा किये गये तत्व है एवं तंत्रिका तंत्र के लिए जहरीले होते हैं। उदाहरणः– डेल्टामेथ्रीन, साइपरमेथ्रीन, परमेथ्रन आदि।

वर्तमान में भारत एशिया में कीटनाशी उत्पादन में द्वितीय एवं उपयोग में 12वें स्थान पर है। कृषि में उपयोग में लिए जाने वाले कीटनाशी के अवशेष पशुचारा एवं मनुष्यों के भोजन में रह जाते हैं एवं खाद्य श्रृखंला के द्वारा मनुष्यों के भोजन में प्रवेश कर जाते है। लगभग सभी कीटनाशी, कीटों के तंत्रिका तंत्र पर प्रभाव डालते है लेकिन साथ ही पाया गया है यह स्तनधारीयों के तत्रिंका तंत्र पर भी प्रभाव डालते है। इनके तंत्रिका तंत्र पर जहरीले प्रभाव के लक्षण पशुओं एवं मनुष्यों में परिलक्षित होते है जो मुख्य रूप से चिड़चिड़ापन, याददास्त में कमी, लड़खड़ा के चलना, दौरे पड़ना एवं पक्षाघात आदि हैं। यह भी पाया गया है कि इनके प्रभाव से प्रतिरक्षा तंत्र कमजोर पड़ता है। आर्गेनोक्लोरीन उत्पाद प्रतिरक्षा तंत्र पर अधिक प्रभाव डालता है जिसके कारण कभी कभी पशुओं में टीकाकरण अप्रभावी हो जाता है। कीटनाशी का उपापचय यकृत में होता है इसलिए यकृत में घाव एवं यकृत सिरोसिस हो जाता है। यहां तक की कीटनाशी के अवशेष कैंसर के भी कारण माने जा रहे हैं। राजस्थान एवं पंजाब के कुछ जिलो में कीटनाशी के कुप्रभावों के कारण कैंसर रोगियों की संख्या बढ़ी है। देश के विभिन्न भागों से दूध एवं दूध उत्पाद के नमूनों जैसे–मक्खन, घी, चीज में ऑर्गेनोक्लोरीन कीटनाशी के अवशेष पाये गये हैं जो भारत वर्ष में चिन्ता का विषय है क्योंकि इन उत्पादों का उपयोग अधिक मात्रा में होता है। मांस एवं मांस उत्पादों में सबसे अधिक संदूषण मुर्गे के मांस में व इसके गाय–भैंस को खिलाने के बाद इनके अवशेष की मात्रा दूध में 0.05 पीपीएम एल्ड्रीन, 2.0पीपीएम डीडीटी पाये गये है। इन कीटनाशियों के उपापचयी उत्पाद इनसे भी अधिक जहरीले होते हैं जो लम्बे समय तक सेवन करने पर कुप्रभाव दर्शाते है। कीटनाशी से प्रजनन तंत्र पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है।

इन उपायों से इसके कुप्रभावों को कम किया जा सकता हैः–

1. समन्वित कृषि प्रबंधनः– मित्र कीटों एवं कीट–भक्षी पक्षियों की संख्या को बढ़ावा देकर एवं कार्बनिक खेती को बढ़ावा देकर इसके कुप्रभावों को कम किया जा सकता है।
2. जैव विघटित कीटनाशी के उपयोग एवं ऑर्गेनोक्लोरीन कीटनाशी के उपयोग पर पूर्णतः प्रतिबंध लगा कर इनके कुप्रभावों को कम किया जा सकता है।
3. ऐसे बीज पैदा किये जाये (जेनेटीकली मोडीफाइड सीड) जो कीटों के नुकशान के प्रतिरोधी हों एवं कीटनाशी के उपयोग की जरूरत ही न पड़े।
4. पशुओं के चारागाह में कम से कम कीटनाशी उपयोग हों तथा उपयोग के काफी समय बाद पशुओं को चरावें ताकि इनके चारे द्वारा इनके शरीर में कीटनाशी का प्रवेश न हो सके।
5. पशुओं में चीचड़ मारने की दवा (साइपरमैथ्रिन, परमैथ्रिन) का उपयोग पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार एवं सावधानी से किया जाये।

डॉ. राजेश नेहरा, डॉ. निदेश जैन, डॉ. राजेश कुमार धूड़िया,
प्रो. त्रिभुवन शर्मा, राजुवास (मो.9414264997.)

पशुओं में एफीमरिल फीवर (तीन दिन का रोग) की पहचान एवं प्रबंधन कैसे करें !

यह एक विषाणुजनित रोग है जिसमें सामान्यतया सभी उम्र की गाय तथा भैंस प्रभावित होती हैं। यह रोग बीमार पशु से दूसरे स्वस्थ पशु में कीट–मच्छर के काटने से फैलता है। इस रोग में सामान्यतया पशु दो से तीन दिन बीमार रहता है परन्तु पेचीदा मामलों में पशु को सही होने में कई सप्ताह का समय भी लग सकता है। यद्यपि इस रोग में मृत्यु दर कम होती है लेकिन अप्रत्यक्ष रूप से पशुपालक को बहुत ज्यादा हानि होती है। इस रोग में दूध उत्पादन में भारी कमी, अन्य रोगों के लिये अधिक संवेदनशीलता, कार्य में कमी एवं मादा पशु का देरी से ताव में आने से अप्रत्यक्ष रूप से हानि होती है।

इस रोग की लक्षणों के आधार पर पशुपालक पहचान कर सकता है। पशु को शुरूआत में तेज बुखार, कंपकंपी तथा मांसपेशियों में झनझनाहट होती है। पशु चलने में असमर्थ हो जाता है तथा अगर पशु को बलपूर्वक चलाया जाए तो मुश्किल से कमर को मोड़कर चलता है। रोगी पशु की भूख कम हो जाती है तथा दूध उत्पादन में एकदम कमी आ जाती है। मुंह से लार टपकना, नाक का बहना तथा आंसूओं का आना भी इस रोग के लक्षण हैं। कुछ पशुओं को शुरूआत में कब्ज तथा बाद में दस्त हो जाते है। प्रभावित टांगों की मांसपेशियों में अकड़न, कठोरपन तथा दर्द शुरू हो जाता है। खुरों की परत में सूजन आ जाने से पशुओं में लंगड़ापन आ जाता है। दर्द होने की वजह से पशु अपने शरीर का वजन एक पैर से दूसरे पैर पर बदल–बदल कर डालता रहता है।

प्रबंधन :–

1. इस बीमारी का कोई निश्चित इलाज नहीं हैं। अतः लक्षणों के आधार पर ही इलाज किया जाता हैं।
2. बुखार तथा दर्द निवारक दवायें लाभकारी सिद्ध होती है, एवं अन्य जीवाणुजनित संक्रमण से बचाव के लिए एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग किया जाना चाहिए।
3. चूंकि यह रोग कीट–मच्छरों के काटने से फैलता है अतः बाड़े में कीट–मच्छरों पर नियंत्रण कर रोग से बचा जा सकता है।
4. इस रोग का कोई टीकाकरण उपलब्ध नहीं है।
5. पशु के बीमार होने पर पशुपालक निकटतम पशुचिकित्सक से तुरंत सम्पर्क करें तथा उचित मार्ग–दर्शन में अपने पशुओं की देखभाल करें।

– प्रो. (डॉ.) ए. के. कटारिया, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

मुर्गे से स्वच्छ मांस उत्पादन के तरीके

मुर्गे का माँस स्वादिष्ट और प्रोटीन, वसा अम्ल, विटामिन और खनिज जैसे पोषक तत्वों से भरपूर होता है, यह अपेक्षाकृत कम मूल्य पर सुलभ है। देश में लोगों के आहार में प्रोटीन की कमी से होने वाली समस्याओं से निपटने के लिए इसकी कारगर भूमिका हो सकती है। यह अत्यधिक स्वादिष्ट, पौष्टिक तथा उपभोक्ताओं में एक उत्तम भोज्य पदार्थ के रूप में प्रचलित है। मुर्गी पालकों को अधिकतम उत्पादन लाभ तथा उपभोक्ताओं को अधिक गुणवत्ता का मांस सुलभ कराने के लिए 5–6 हफ्ते की आयु के मुर्गे को जबकि उनका भार 1.5 कि0ग्र0 हो, उपयोग में लिया जा सकता है। परन्तु यह बाजार मांग तथा उत्पाद मूल्य पर निर्भर है।

मांस का रासायनिक संघटन (प्रतिशत में)

संघटन (%)	मुर्गे का मांस
नमी	73.87
अपरिष्कृत प्रोटीन	20.66
वसा	3.61
कुल मांस	1.08
सुलभ कार्बोहाइड्रेट	0.78

अच्छे गुणों के बावजूद मुर्गे का मांस हानिकारक जीवाणुओं की वृद्धि में सहायक बनता है। मांस में उपस्थित पोषक पदार्थ, जीवाणुओं के लिए उचित वृद्धि माध्यम का कार्य करते हैं। अतः अस्वच्छ तरीके से उत्पादित मुर्गे का मांस मनुष्य में कई जानलेवा बीमारियों का कारण बन सकता है। स्वच्छ मुर्गे का मांस उत्पादन के कुछ प्रमुख बिन्दुओं पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

मुर्गे की प्रसाधन प्रक्रिया

विपणन के लिए प्रसाधित मुर्गा उपलब्ध कराने के लिए आवश्यक प्रक्रिया के चरणः–

- काटने से पहले : मुर्गे को प्रसाधित करने से 12 घंटे पहले से आहार देना बन्द कर देना चाहिए जिससे मुर्गे के अन्नपुट में भोज्य पदार्थ न रहे। इससे प्रसाधित मुर्गा हर सम्भव सन्दूषण से बचा रहता है। परन्तु इस अवधि में मुर्गे को पीने के लिए पर्याप्त पानी उपलब्ध रहे जिससे ऊतक निर्जलीकरण द्वारा श्लथ न हो सके
- प्रसाधन से पहले परीक्षणः मुर्गे को प्रसाधित करने से पहले उनका भलीभाँति परीक्षण करना चाहिए। यदि किसी पक्षी को कोई बीमारी हो अथवा किसी अन्य असामान्य दशा के चिन्ह हो तो उस पक्षी को प्रसाधित नहीं करना चाहिए क्योंकि यह मनुष्य के खाने के योग्य नहीं रहता
- मुर्गे को हलाल करें: मुर्गो को मारने के लिए गल शिरा (जुगुलर) तथा कैरोटिड धमनी को कान के ठीक पीछे और नीचे की ओर से एक तेज चाकू से काट देना चाहिए परन्तु श्वास नली तथा ग्रास नली न कटे
- रक्त निकालनाः मर जाने के बाद 1.5 से 2 मिनट तक मुर्गे का रक्त निकल जाने दें। इससे मांस अधिक समय तक संचित किया जा सकता है।
- गर्म पानी में डुबोनाः मुर्गे को उनकी सभी प्रत्यावर्ती क्रियाओं के समाप्त हो जाने के बाद 138°F तापमान पर, 1.5 से 2 मिनट तक गर्म पानी में डुबोना चाहिये। इस प्रक्रिया में पानी के समस्त क्षेत्र का तापमान समान होना चाहिए। इसके द्वारा मुर्गे के पंख आसानी से अलग किये जा सकते हैं, क्योंकि गर्म पानी में डुबोने से पंख के पुटकों की पेशियां फैल जाती हैं और पंखों पर उनकी पकड़ ढीली हो जाती है।
- पंख उखड़नाः गर्म पानी में डुबोये गये मुर्गो को निकालकर, पंख निकालने के लिए एक विशिष्ट यन्त्र में डाला जाता है। यह यंत्र स्टील का बना हुआ एक ड्रम जैसा होता है, जिसमें हर ओर रबर की उंगलियां लगी होती हैं। इस यंत्र के नीचे इसका मोटर होता है। यंत्र चलते ही ड्रम का नीचे का हिस्सा घूमने लगता है और रबर की उंगलियों से पंख स्वयं ही निकल जाते हैं। मुर्गे को इसमें रखने के पहले यन्त्र के उस भाग को, जिसके पंख उखाड़े जाने हों, गीला कर लेना चाहिए। यदि केवल कुछ ही

को प्रसाधित करना हो, तो पंखों को हाथ द्वारा भी उखाड़ा जा सकता है। अधिकतर उपभोक्ता त्वचा रहित प्रसाधित मुर्गे लेना अधिक उपयुक्त समझते हैं अतः उसके लिए, मुर्गो को गर्म पानी में डालने और पंख उखाड़ने की अपेक्षा उनकी त्वचा पंख सहित, रक्त स्राव के पश्चात निकाल देना चाहिए लेकिन हाथों द्वारा पंख अथवा त्वचा निकालने में परिश्रम अधिक लगता है

- सिर काटना: एक तेज चाकू से गले और सिर के जोड़ से सिर अलग कर देना चाहिए
- तेल ग्रन्थि तथा टखनों को अलग करना: मुर्गे की पूँछ के आधार पर स्थित तेल ग्रन्थि तथा टखनों (टीबियो–टारसल सन्धि) को तेज चाकू की सहायता से काट कर निकाल दें
- धोना तथा साफ करना: प्रसाधित मुर्गों को साफ पानी से भली प्रकार धो लेना चाहिए
- आन्तरिक अंगों को बाहर निकालना: गर्दन की त्वचा को लम्बवत काट दें। ग्रास नली तथा श्वास नली को संयोजी ऊतक से अलग करके आधार पर, जहाँ से शरीर गुहा से मिलते हैं, काट दें। शरीर गुहा को खोलने के लिये छाती की हड्डी के नीचे एक अनुप्रस्थ काट लगाकर, दो तीन उंगलियों द्वारा शरीर गुहा के समस्त भीतरी अंग बाहर निकाल लें। हृदय, यकृत तथा पेषणी (गिजर्ड) को अलग कर दें। हृदयावरणी झिल्ली, यकृत से पित्ताशय तथा गिजर्ड की भीतरी परत निकाल देनी चाहिये। यह तीनो अंग (हृदय, यकृत तथा गिजर्ड) सम्मिलित रूप से "गिब्लेट" कहलाते हैं। इन्हे भली प्रकार साफ करके और धो कर खाने के काम में लाया जा सकता है
- शव परीक्षण: निकाले गये समस्त भीतरी अंगों और प्रसाधित मुर्गे को लटका दिया जाता है और उसका पुनः किसी बीमारी आदि के लक्षणों की उपस्थिति के लिए परीक्षण किया जाता है
- धोना और साफ करना: प्रसाधित मुर्गे को पुनः अच्छी तरह स्वच्छ पानी में धोया जाता है तथा विशेषतः उसकी भीतरी गुहा को भली प्रकार साफ करना चाहिये
- ठंडा करना: साफ हो जाने के बाद मुर्गो को बर्फ और पानी के मिश्रण में 4–5°से0ग्रे0 तापमान पर 3 से 4 घन्टे के लिए रखते हैं। ऐसा शरीर ऊष्मा तथा बैक्टेरिया द्वारा संक्रमण कम करने के उद्देश्य से किया जाता है। ठंडे किये हुए मुर्गो को 15 मिनट के लिये लटका देना चाहिये ताकि पानी बाहर निकल जाये।
- भण्डारण तथा पैकिंग: भण्डारण और विक्रय के लिए मुर्गे को सुरक्षित बाँधने के लिये सावधानी रखना आवश्यक है। आम तौर पर ठंडा किये हुए मुर्गो को सूखे थैले में बन्द किया जाता है। यदि कम समय (7–10 दिन) तक भंडारण करना हो, तो उन्हे 5°से0ग्रे0 तापमान पर रखा जा सकता है परन्तु अधिक लम्बे समय (6 माह) तक भंडारण के लिए 15°से0ग्रे0 से 22°से0ग्रे0 तापमान पर रखना चाहिये
- परिवहन: प्रसाधित मुर्गों को यदि अधिक दूर भेजना हो तो ऊष्मारोधी (इन्सुलेटेड) गाड़ियाँ, जिनमें ठंडक प्रक्रिया (रेफ्रिजरेशन) की उचित व्यवस्था हो, प्रयोग करनी चाहिये। परन्तु थोड़ी दूर भेजने की स्थिति में ऊष्मारोधी डिब्बे जैसे बर्फ के बक्से अथवा लकड़ी के बक्से, जिनमें थरमाकोल लगा हो, प्रयोग किये जा सकते हैं

खाने योग्य तथा अखाद्य भाग

प्रसाधित मुर्गियों में खाने योग्य मांस की उपलब्ध मात्रा भी एक ऐसा आवश्यक गुण है जो उपभोक्ता की पसन्द के लिए आवश्यक है। लगभग छः हफ्ते की आयु में मुर्गे से प्राप्त कुल मांस में खाने योग्य तथा न खाने योग्य मांस की मात्रा क्रमशः 68 तथा 32 प्रतिशत पायी जाती है। मादा पक्षी में पंख तथा जनन अंगों का भार अधिक होने के कारण इसमें खाने योग्य मांस की मात्रा नर पक्षी की अपेक्षा कम होती है। प्रसाधित मुर्गे के कुल हड्डी रहित खाने योग्य मांस में छाती, जांघे तथा टाँगो का योगदान क्रमशः 49, 19 तथा 11 प्रतिशत होता है जबकि पीठ, गर्दन तथा पंख से कुल मिलाकर केवल 21 प्रतिशत मांस प्राप्त होता है।इनको ध्यान में रखकर किया गया मुर्ग मांस उत्पादन, मुर्गी पालकों तथा उपभोक्ताओं दोनों के लिए ही फायदेमन्द सिद्वहो सकता है।

डॉ. योगेश कुमार, डॉ. प्रतीक शुक्ला और डॉ. अमनदीप (9639629770)
वेटरनरी कॉलेज, गो0ब0पन्त कृषि एवं प्रौ0 विश्वविद्यालय

सफलता की कहानी

प्रेरणादायक है शरह नत्थानियान गोचर का संरक्षण

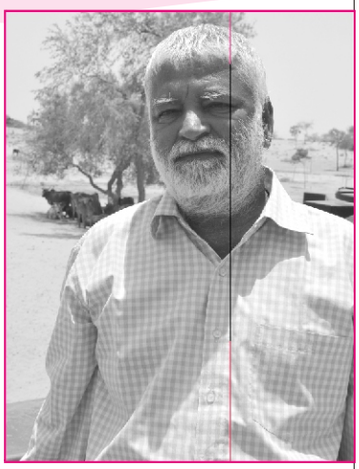

हमारे गांवों, कस्बों, शहरों में ''गोचर'' प्राचीनकाल से एक परंपरा के रूप में मौजूद हैं जहां स्थानीय पशुओं के लिए आहार और चारा भरपूर उपलब्ध होता है। ये गोचर स्थानीय लोगों और समुदायों की दृढ़ इच्छा शक्ति से संरक्षित रहते हैं। बीकानेर शहर के दक्षिणी–पश्चिमी शहर से सटी शरह नत्थानियान गोचर भूमि 27 हजार बीघा क्षेत्रफल में आज भी सुरक्षित और संरक्षित है। बीकानेर शहर के बृजनारायण किराडू और इस गोचर संरक्षण एवं विकास समिति के सदस्यगण रात–दिन इसकी देखभाल बगैर कोई लाभ लिए करते हैं। शरह नत्थानियान गोचर भूमि संरक्षण और विकास समिति द्वारा गत 30 वर्षों से इसकी सार–सम्भाल के सुखद परिणाम मिल रहे हैं। रियासतकाल में गोचर के लिए यह भूमि छोड़ी गई। बीकानेर शहर के नाल रोड़ पर स्थित इस गोचर भूमि से बीकानेर शहर और आसपास बसे 10 गांवों के पशुपालक और गौवंश इससे सीधे तौर पर लाभान्वित हो रहे है। समिति के अध्यक्ष बृजनारायण किराडू के अनुसार चारा युक्त गोचर भूमि का उपयोग क्षेत्र के आस–पास के गौवंश द्वारा बिना किसी रोक–टोक के किया जाता है। पिछले 30 वर्षों से समिति द्वारा जन सहभागिता से इस गोचर को वृक्षों की कटाई, कब्जे और काश्त नहीं होने देने और सुरक्षित रखने के प्रयासों का लाभ आम पशुपालकों को मिल रहा हैं। इसके साढ़े आठ हजार बीघा क्षेत्रफल में सेवण घास है। समिति द्वारा 8 वर्ष पूर्व राज्य के सीमान्त जिलों से सेवण घास के बीज लाकर बिजाई करने के भी अच्छे नतीजे मिले। सेवण घास पशुओं के लिए वरदान है। थोड़ी सी मौसमी बरसात के साथ ही सेवण घास पुनः अपने अस्तित्व में आ जाती है। जिसे पशु बड़े चाव से चरते है। समिति द्वारा संरक्षण और संवर्द्धन से करीब डेढ़ लाख खेजड़ी के वृक्ष, बेर की झाड़ियां, केर–सांगरी, जड़ी–बूटियों की वनस्पति गोचर में पल्लवित हो रही है। आसपास क्षेत्र के लोग और गौवंश इसका उपयोग करते हैं। कुछ परिवार गोबर सहित अन्य उत्पादों से अपनी आजीविका का कुछ अंश इससे प्राप्त करते हैं। इस क्षेत्र के वन्य जीवों को भी गोचर से सरंक्षण और पनाह मिली है। शहर से सटा होने के कारण यह प्राणवायु के उद्गम का भी एक प्रमुख स्त्रोत है। हर गांव और शहर में गोचर भूमि से पशुधन के लिए प्राकृतिक पौष्टिक चारा और खाद्य उत्पाद मिल सकते हैं। बृजनारायण किराडू और उनक सहयोगियों का यह कार्य हम सबके लिए प्रेरणादायी है। हर गोचर का संरक्षण जागरूक लोगों द्वारा होने से ही हम इसके उद्देश्यों में सफल हो सकते हैं। **(बृजनारायण किराडू, मो.9413389008)**

विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर शोध कार्य

बकरियों में पैर के रोगों का शयनिक अध्ययन

वर्तमान अध्ययन में कुल 810 नर–मादा बकरियां जिनकी शल्य चिकित्सा निदानालयन में पैरों के रोगों की जांच की गई। कुल 810 बकरियों में से 140 बकरियां पैरों के रोगों से ग्रसित पाई गई। पैरों के रोगों का कुल प्रतिशत 17.28 पाया गया। हालांकि अधिक बढ़े हुए खुरों का आपात अन्य पैरों के रोगों की तुलना में अधिक 57.14 प्रतिशत था । पांच वर्षों के अतीत प्रभावी अध्ययन में कुल 2060 दोनों लिंगों की बकरियों के पैरों के रोगों की जांच की गई जिनमें 271 बकरियां पैरों के रोगों से ग्रसित पाई गई। पैरों के रोगों का कुल प्रतिशत 13.21 पाया गया। हालांकि अधिक बढ़े हुए खुरों का आपात अन्य पैरों के रोगों की तुलना में अधिक 44.28 प्रतिशत था। वर्तमान और अतीत प्रभावी अध्ययन में पैरों के रोग वृद्धावस्था वाली बकरियों में बकरों की अपेक्षा अधिक पाये गये। वर्षा ऋतु में रोग अधिक पाया गया। रोग पिछले पैरों की अपेक्षा अगले पैरों में अधिक मिला। इस बात को विचार में लाये बिना कि रोग पिछले पैरों में है या अगले पैरों में, बाहरी पंजा भीतरी पंजे से अधिक रोग ग्रसित पाया गया। अधिक बढ़े हुए खुर नामक अपसामान्यता सबसे अधिक पाई गई। पैरों में पाये जाने वाले अन्य रोग इस प्रकार थे– तीव्र संधिशोध, अंगुलियों के बीच की त्वचाशोध, पैरो का क्षय, फेटलॉक या पेस्टर्न का घाव, अभिघातक चोट, अंगुलियों की बीच ऊतक वृद्धि, ऐड़ी पर सूजना या घाव, अंगुल्यस्थियों का अस्थिभंग, छिदे हुए पैर एवं बेढ़ंगा पेस्टर्न। सामान्य विकिरण चित्रण परीक्षण ने पैरों के विभिन्न रोगों के विभेदन में महत्वपूर्ण सहायता उपलब्ध कराई। अधिक बढ़े हुए खुर नामक रोग विकिरण चित्रण द्वारा निम्न लक्षणों युक्त पहचाने गए–अंगुल्यस्थियों की बाह्य अध्यअस्थियां, दूरस्थ अंगुल्यस्थि की ओस्टियोलिसस या डिमिनरेलाइजेशन, द्वितीय अंगुल्यस्थि का घूर्णन, अंगुल्यस्थियों के अस्थिभंग। खुरों की दोषनिवारक काट–छांट की अच्छी प्रतिक्रिया देखी गई। चिकित्सा हेतु शीघ्र प्रयास ने सन्तोषप्रद रूप से सभी प्रकार के रोगों को उपचारित किया। पशुओं के मालिकों को पैरों के रोगों के आपात को कम करने हेतु पशुओं के लिए अच्छा स्वास्थकर वातावरण, नियमित रूप से खुरों की काट–छांट, नीले थोथे के एक प्रतिशत विलियन में पैरों का स्नान एवं पर्याप्त कसरत की सलाह दी गई।

शोधकर्ता–सुनील कुमावत, समादेष्टा–डॉ. एन.आर. पुरोहित (मो 9352243200)

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान-सितम्बर, 2014

पशु रोग	पशु प्रकार	क्षेत्र
मुँह खुरपका रोग (FMD)	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	बाँसवाड़ा, भरतपुर, दौसा, श्री गंगानगर, जयपुर, झुंझुनूं, अनूपगढ़, धौलपुर, सवाई माधोपुर, अलवर
गलघोंटू (H.S.) (Haemorrhagic septicemia)	भैस, गाय	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई माधोपुर, दौसा टोंक, बून्दी, राजसमन्द,,पाली, सीकर, श्रीगंगानगर
ठप्पा रोग (B. Q.)	भैंस	अनूपगढ़, जयपुर, बीकानेर
पी.पी.आर. (P.P.R.)	बकरी	सवाई माधोपुर, बीकानेर
चेचक (Pox)	बकरी	जयपुर, श्री गंगानगर, बीकानेर
सर्रा (Trypanosomosis)	ऊँट, भैंस	अनूपगढ़, बाँसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी, बीकानेर
फड़किया (E.T.)	बकरी, भेड़	सवाई माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर
इफिमरल बुखार (Ephemeral fever)	भैंस, गाय	समूचे राजस्थान में
पाश्च्युरिल्लोसिस (Pasturellosis)	गाय, भैंस, ऊँट	बीकानेर, चुरू
रक्त प्रोटोजोआ (Theileriosis, Babesiosis)	भैंस, गाय	बाँसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, अनूपगढ़, सवाई माधोपुर, श्री गंगानगर, जयपुर
गोल–कृमि (Round Worms)	भैंस, बकरी, गाय	सीकर, धौलपुर, सवाई माधोपुर
फीता–कृमि (Tape Worms)	भैंस, बकरी, गाय	सीकर, धौलपुर, कोटा
पर्ण–कृमि (Trematodes)	ऊँट, भैंस, गाय, भेड़, बकरी	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बाँसवाड़ा, सवाई माधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, अनूपगढ़, सूरतगढ़, सीकर
खुजली (Mange)	ऊँट	समूचे राजस्थान में

इसके अतिरिक्त मुर्गियों में गमबोरो रोग, दीर्घ श्वसन रोग, कोक्सीडिओसिस (खूनी दस्त), गोल एवं फीता–कृमि, कोराइजा, एविएन ल्यूकॉसिस काम्पलेक्स, कोलिबेसिलोसिस (सफेद दस्त) आदि रोगों की सम्भावना है। मुर्गी पालकों से निवेदन है कि इस संबंध में विस्तृत जानकारी विशेषज्ञों से प्राप्त कर लें।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करे – डॉ. बी.के. बेनीवाल, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं डॉ. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग एवं डॉ. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास, बीकानेर । फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183

मुख्य समाचार

गौ महोत्सव में सात दिवसीय पशुपालन प्रदर्शनी

बीकानेर। राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा माखनभोग (पूगल रोड) में आयोजित गौ महोत्सव में पशुपालन पर सात दिवसीय प्रदर्शनी आयोजित की गई। इस प्रदर्शनी में राज्य की देशी गौवंश संवर्द्धन कार्यों और उनके महत्व पर चार्टस,माडॅल द्वारा उपयोगी जानकारी दी गई। हाइड्रोपोनिक्स मशीन द्वारा बिना मिट्टी और जमीन के उगाई गई हरे चारे को भी प्रदर्शित किया। साइलेज द्वारा चारे का संरक्षण, पोषण युक्त चारे को ईंट के रूप में भंडारण सहित पशुओं से सम्बद्ध परियोजनाओं और कार्यों का दिग्दर्शन भी करवाया गया। प्रदर्शनी स्टॉल में पशुपालकों को उपयोगी तकनीकी जानकारी और साहित्य का भी वितरण किया।

विश्वविद्यालय का 7वां पशुधन अनुसंधान केन्द्र बोजून्दा चित्तौड़गढ़ में शुरू

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय का सातवां पशुधन अनुसंधान केन्द्र, चित्तौड़गढ़ के बोजून्दा में स्थापित किया गया है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के.गहलोत ने इस आशय के आदेश जारी कर बोजून्दा फार्म को यह दर्जा प्रदान किया है। राज्य सरकार ने इसके लिए 120.46 हैक्टेयर भूमि का आंवटन किया है। राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 76 पर चित्तौडगढ़ से 3 कि.मी दूर उदयपुर रोड की तरफ यह केन्द्र स्थित है। यहां पर भविष्य में प्रारम्भ होने वाली सभी परियोजनाएं, कार्यक्रम और इकाईयां पशुधन अनुसंधान केन्द्र के नाम से जानी जाएगी। राष्ट्रीय कृषि विकास योजना में इस पशु अनुसंधान केन्द्र पर सिरोही नस्ल की 300 बकरियों पर अनुसंधान कार्य शुरू हो गया है। केन्द्र में प्रजनन से उत्तम नस्ल के बकरों को पंजीकृत बकरी पालकों में वितरित किया जाएगा। इस अनुसंधान केन्द्र पर दो ट्यूबवैल से सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है और वर्तमान में 15 बीघा में हरा चारा, 80 बीघा में सोयाबीन तथा 6 बीघा में तिल की बुवाई की गई है।

ऊंटों के ऑपरेशन थिएटर में सुविधा

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय की पशु क्लिनिक में ऊंटों के ऑपरेशन थिएटर में तीन ईंच मोटे फोम के गद्दे लगाकर सुविधायुक्त और आसानी से किटाणु रहित बनाने का कार्य किया गया है। क्लिनिक के निदेशक प्रो. टी. के. गहलोत ने बताया कि थिएटर के कच्चे फर्श पर टाईल लगाकर 15 फीट गुणा 18 फीट का फोम लगाने से तत्काल धुलाई और किटाणु रहित करने में आसानी रहेगी। पहले दिन इस थिएटर में तीन ऊंटों का ऑपरेशन करके दो की आंखे और एक ऊंट के टूटे जबड़े का ऑपरेशन सफलता पूर्वक किया गया।

हरे चारे की साइलेज तकनीक पर उच्च स्तरीय बैठक सम्पन्न

बीकानेर। हरे चारे की साइलेज तकनीक पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत की अध्यक्षता में रिलांयस इण्डस्ट्रीज, पशुपालन विभाग और वेटरनरी विश्वविद्यालय के डीन–डायरेक्टर्स की बैठक 12 अगस्त को आयोजित की गई। बैठक में राज्य में हरे चारे के संरक्षण की तकनीक को लेकर कार्य योजना पर विचार–विमर्श किया गया। बैठक में राज्य के पशुपालन विभाग के निदेशक डॉ. राजेश मान, रिलांयस इण्डस्ट्रीज लि. के उपाध्यक्ष श्री एस. एन. संतानी, श्री राकेश शाह और श्री टी. गंगोपाध्याय ने भाग लिया। हरे चारे के संग्रहण और सरंक्षण की उपयोगी साइलेज तकनीक को लेकर गत वर्ष वेटरनरी विश्वविद्यालय और रिलांयस इण्डस्ट्रीज लि. के बीच एक आपसी करार (एम.ओ.यू) किया गया था। उसी के अनुसरण में आगे इसकी कार्य योजना के क्रियान्वयन पर विचार–विमर्श किया गया।

कालू में बांझपन निवारण शिविर में 135 पशुओं का उपचार

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय और महावीर इन्टरनेशनल बीकानेर इकाई के संयुक्त तत्वाधान में कालू गांव में 17 अगस्त को आयोजित निःशुल्क बांझपन निवारण चिकित्सा शिविर में पशु मादा रोग एवं प्रसूति विभाग के विशेषज्ञ चिकित्सकों ने 135 पशुओं की जांच कर उपचार किया। जगदम्बा भक्त मण्डल, कालू के सहयोग से आयोजित एक दिवसीय शिविर में विश्वविद्यालय के मादा एवं प्रसूति विभाग के प्रो. जे. एस. मेहता, डॉ. प्रमोद और डॉ. सुमित यादव सहित 12 चिकित्सकों ने अपनी सेवाएं प्रदान कर बड़ी संख्या में पशु लेकर पहुंचे ग्रामीण पशुपालकों को राहत प्रदान की। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए. के. गहलोत ने शिविर का निरीक्षण किया। प्रो. गहलोत ने पशुपालकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस क्षेत्र में गौपालन ग्रामीणों का प्रमुख व्यवसाय है। अकाल या अन्य विपरीत परिस्थितियों में पशुधन हमारा सच्चा हितैषी है। अतः इसकी सलामती के लिए हमें सदैव सचेष्ट रहना होगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय की विशेषज्ञ सेवाएं इसके लिए सदैव उपलब्ध है। प्रो. गहलोत ने बताया कि वेटरनरी विश्वविद्यालय राज्य में बांझपन के कारणों का पता लगाने के लिए सर्वे करवायेगा। उसके अनुसार बांझपन निवारण के लिए योजनाबद्ध कार्य किया जाएगा। हमारे यहां दुधारू श्रेष्ठ गौवंश मौजूद है। विश्वविद्यालय श्रेष्ठ नस्ल के नंदी गौशालाओं को उपलब्ध करवा कर प्रदेश में दुग्ध उत्पादन बढ़ाने के लिए संकल्पबद्ध है।

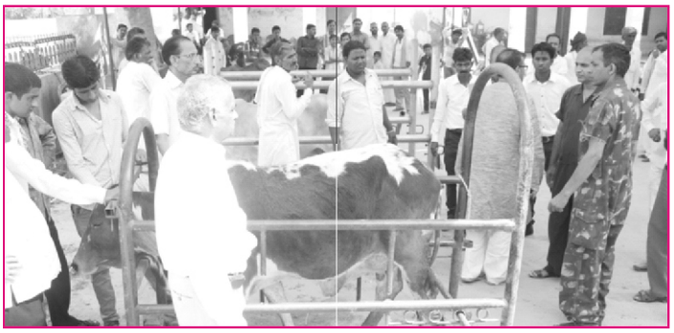

वेटरनरी कॉलेज के 60 वर्ष : एस्केड प्रशिक्षण का एक दशक पूरा

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए. के. गहलोत ने कहा कि बीकानेर में सन् 1954 में स्थापित देश के दसवें पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान महाविद्यालय ने अपनी स्थापना के 60 वर्ष में पशुचिकित्सा एवं विज्ञान व्यवसाय में प्रतिभावन पशु चिकित्सक दिए हैं जो आज भी देश और दुनिया भर में सेवारत हैं। एपेक्स सेन्टर देश का पहला संस्थान है जहां वर्ष 2004 से पशुओं में रोगों की रोकथाम के लिए राजस्थान और छतीसगढ़ सरकार के पशुचिकित्सकों को रोगों की नवीनतम तकनीक और रोग निदान का सघन प्रशिक्षण दिया जा रहा है। कुलपति 19 अगस्त को वेटरनरी कॉलेज के 61 वें स्थापना दिवस और एस्केड प्रशिक्षण के एक दशक पूरा होने के उपलक्ष में समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। प्रो. गहलोत ने कहा कि राज्य के पहले वेटरनरी विश्वविद्यालय का प्रार्दुभाव 2010 में वेटरनरी कॉलेज से हुआ जो कि अब इसका संगठक महाविद्यालय है जिसने 60 वर्षो में विशिष्ट उपलब्धियां अर्जित की है। देश के अग्रणी संस्थान ने पशुपालन व कृषि सेवाओं और अनुसंधान कार्यों में अपना महत्ती योगदान किया है। प्रो. गहलोत ने घोषणा की कि कॉलेज स्थापना के दिवस को वर्ष पर्यन्त समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। कुलपति ने एपेक्स सेन्टर द्वारा एस्केड प्रशिक्षण के 11वें वर्ष में राज्य के 20 पशुचिकित्सकों के बैच को सम्बोधित करते हुए कहा कि अपने क्षेत्र में किसी भी पशुरोग या महामारी को नियंत्रित या कम करने में क्विक रेस्पांस टाईम को कम करने की जरूरत है। तत्काल समय पर कार्यवाही करने से पशुधन संपदा के भारी नुकशान से बचा जा सकता है। विश्वविद्यालय के एपेक्स सेन्टर द्वारा पशुपालन विभाग की सूचना पर आकस्मिक बीमारियों की रोकथाम में तत्काल मदद की जा रही है। जिसका लाभ सीधे तौर पर पशुपालकों और किसानों को मिलता है। प्रो. गहलोत ने बताया कि विश्वविद्यालय की एस.एम.एस सलाहकारी सेवाओं का लाभ जनजातिय क्षेत्र उदयपुर के 25 हजार पशुपालकों को शीघ्र मिलना शुरू हो जाएगा। पशुपालन विभाग द्वारा उपलब्ध पशुपालकों की सूचियों के अनुरूप राज्य के सभी संभागों में इसका विस्तार किया जाएगा।

निदेशक की कलम से...

आधुनिक तकनीक को अपनाकर लाभदायक बनाएँ पशुपालन

प्यारे पशुपालक भाईयो !

आशा है पिछले माह का विशेषांक अच्छा लगा होगा एवं उसमें दी गयी विशेष सामग्री आपके लिए ज्ञानवर्द्धक एवं लाभप्रद सिद्ध होगी। हमारा यही उद्धेश्य है कि ''पशुपालन नए आयाम'' आपको हर माह सामयिक एवं नवीन जानकारी देता रहे जिससे पशुपालन में आपकी हो रही समस्याओं का समाधान मिल सके और आप प्रगति की राह पर बढ़ सकें। अपने देश–प्रदेश में पशुपालन से जुड़े प्रत्येक पशुपालक की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति एक समान नहीं है जबकि विकसित देशों के पशुपालकों की गिनती प्रगतिशील एवं प्रतिष्ठित वर्ग में की जाती है। हमारे देश में पशुपालकों का बहुत बड़ा वर्ग गरीब, निरक्षर, रूढ़िवाढ़ी एवं असंगठित है। यह वर्ग नई तकनीकी को अपनाने में पीछे रहता है और नई तकनीक के प्रति अरूचि दिखाकर नई पीढ़ी को हतोत्साहित कर रूकावट डालता है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि पशुपालकों की इस मानसिकता को देखते हुए पशुधन कल्याण के कार्यक्रमों का प्रारम्भ उन्हीं समस्याओं से करना चाहिए जिन पर नियंत्रक उपायों का तत्काल प्रभाव दिखाया जा सके जैसे कि बीमार पशु का इलाज, रोगी का उपचार एवं टीकाकरण द्वारा बचाव तथा अंतः परजीवियों के संक्रमण के उपचार व बचाव से उपयुक्त समय पर प्रजनन एवं सही नस्ल सुधार कार्यक्रम को अपनाने से तथा उचित आहार, आवास तथा रखरखाव की व्यवस्था करने से पशुपालकों का इन नवीन कार्यक्रमों की तरफ आकर्षण किया जा सकता है। लाभप्रद पशुपालन (मुख्यतः गाय, भैंस, भेड़, बकरी पालन) हेतु पांच सूत्री कार्यक्रम अपनाना होगा–

1. लाभप्रद आर्थिक इकाई की स्थापना एवं उपयुक्त आवास तथा रख–रखाव की व्यवस्था करना 2. संतुलित पोषण व्यवस्था तथा चारा उत्पादन एवं चारागाह संरक्षण पर ध्यान देना 3. नस्ल सुधार हेतु उत्तम नर एवं उत्तम प्रजनन पद्धतियां अपनाना 4. उत्तम स्वास्थ हेतु रोग नियंत्रण उपायों को अपनाना 5. दैनिक परिचर्या एवं उत्पादन सम्बन्धि आंकड़े रखना।

प्रो. (डॉ.) चन्द्रेश कुमार मुरड़िया, प्रसार शिक्षा निदेशक

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित धीणे री बात्यां के अन्तर्गत सितम्बर 2014 में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	प्रो. हेमन्त दाधिच पशु व्याधि विभाग 09351687945	बकरियों में होने वाले रोग एवं उनका निदान	04.09.2014 सांयः 5.30 बजे
2	प्रो. बसन्त बैस एल.पी.एम विभाग 0151–2250746	पशु प्रबधन में नयी तकनीकों का योगदान	11.09.2014 सांयः 5.30 बजे
3	प्रो. टी. के. गहलोत निदेशक क्लिनिक्स 09414137029	बोझा ढ़ोने वाले पशुओं के शल्य रोग व उपचार	18.09.2014 सांयः 5.30 बजे
4	प्रो. सी. के. मुरड़िया निदेशक प्रसार शिक्षा 09001862000	लाभप्रद पशुपालन के नए आयाम	25.09.2014 सांयः 5.30 बजे

पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि निर्धारित समय पर प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठायें।

मुस्कान !

संपादक
प्रो. सी. के. मुरड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
उपनिदेशक (जनसम्पर्क)
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पशु पालन नए आयाम
मासिक अंक : सितम्बर, 2014

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजूवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक सी. के. मुरडिया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजूवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : सी. के. मुरडिया